अलबेला

किमत ३० पैसे

✡ भगवान आर्ट फ्रन ✡

डायरेक्टर-भगवान + म्यु.-सी. रामचंद्र

कलाकार-भगवान, गीताबाली, बाबूराव, वगैरे

० अलबेला के गाने ०

--१--

प्रेम-गजब की निंद है जालिम शबाब सोया है
चमन की गोद में जैसे गुलाब सोया है
आशा-महफिल में मेरी कौन ये दिवाना आ गया
प्रेम-देखा तुम्हें तो हुस्न पे मर जाना आ गया
आशा-आना है मेरे पास तो खंजर को देखले
और युं ही कही आंख के नश्तर को देखले
प्रेम-जब शमां ने पुकारा तो परवाना आ गया
आशा-दिवाने अपने मौत से भी डर नही तुम्हें
प्रेम-दिवाने ऐसे होते है अबर नही तुम्हें
अब हुस्न होशियार का जमाना आ गया

लता-- २

धीरे से आजारी अखियन में निंदिया आजारी
आजा धीरे से आजा
चुपके से तैनन की बगियन में निंदिया आजारी
लेकर सुहाने सपनो की कलिया
आके बसादे पलको की गलिया

ओ बेट पको की छोटीसी गलियन में
६-दोनो तारो से छुपकर तारो से चोरी
देती है चंदा को लोरी
हसता है चंदा भी निंदियन में निंदिया आजारी
३-प्यारे-दिवाना परवाना शमा पे आया
लेके दिल का नजराना
जान जलाये सुख पाए जलने में मजा आये
जलने के ढंग निराले समझे क्या दुनिया वाले
ये इश्क तेरा अफसाना
परवाने के पंख जलाकर शमा पछताए
याद में परवाने की २ सुबह तक नीर बहाये
खेल नही है दिलका लगाना
प्यारे जलने जलाने मै कहानी है प्यार की
आशा-मिटने मिटाने में जवानी प्यार की
प्यारे-प्यार में मरना आशा-जीने का मजा
प्यारे-हसीनो के मुहब्बत में बुरा अंजाम होता है
मेरी जां प्यार म घरबार निलाम होता है
कभी काजल की फरमाइस
कभी पावडर की फरमाइस
कभी सरकार की जिद और कभी थिएटर की फरमाइस
निकलवाती है दिवाला कभी दिलबर की फरमाइस

कचेरी और थाने में बहुत नाम होता है मचंद्र
टके हो जेब में तो हुस्न भी दिल लगाते है
गल में डालकर बाँहें बड़ी उल्फत जगाते है
अगर आशिक हो कड़का तो दुर से रास्ता दिखाते है
हो जिनका बैंक में खाता वोही गुजफाम होते है
अगर मानो पते की बात कहता हुं बड़ी अच्छी
हसीनो से तो साहब खटमल की दोस्ती अच्छी
वह काटता है खटमल देखकर कोई घड़ी अच्छी
हसीनो का अगर दिन रात यही काम होता है

चितलकर०- ५

कभी काली रतिया कभी दिन सुहाने
किस्मत की बाते किस्मत ही जाने
ओ बेटा जी किस्मत की हवा कभी नरम कभी गरम
बड़ी अकड़ से बेटा निकले यकटर होने
बाहरे किस्मत में निकले बर्तन धोने
ओ बेटा जी जीने का मजा...
दुनिया की इस चिड़ीया घर में तरह २ का जलवा
मिले किसी को सुखी रोटी किसी को पुरी हलवा
ओ बेटा जी खिचड़ी का मजा...
दर्द दिया था थोड़ा २ खुशी भी थोड़ी २
बाहरे मालिक दुख और सुख की बनाई जोड़ी

ओ बेटा जी जीवन का नशा कभी...

६-दोनो-मेरे दिलकी घड़ी करे टिक टिक
ओ बजे रात के बारा हाय तेरी याद ने मारा
खामोश जमाना सोये एक मेरा ही दिल क्यो रोये
और दिलपे तीर चलाये इक झिलमिल सरता तारा
न बने बात कुछ कहके
और जले जिया २ चुप रहके
बस तड़पे चुपके २ मजबूर कोई बिचारा
अखियो के निंदिया भीगी पलको में रिमझिम लागी
अब आज मिला वो साजन दिल तड़प २ के हारा

७-दिल धड़के नजर शरमाए
तो समझो प्यार हो गया
रातो में निंद न आए तो समझो प्यार हो गया
अखिया दिन को सपने देखे पागल गतवा डोले
मीठा दर्द उठ जब होले
और याद किसी की आए जिया भर आए
चुपके २ मन में लागे अरमानो का डेरा
कोई किसी की याद में डुबा बैठा रहे अकेला
तस्वीर सी एक बन जाए नजर न आए

--८--

शाम ढले खिड़की तले तुम सीटी बजाना छोड़दो

प्यारे-घड़ी २ खिड़की तले तुम तीर चलाना छोड़दो
आशा-रोज २ तुम मेरी गली में चक्कर काटते हो
प्यारे-सच्ची २ कहु में अजी तुमरे वास्ते
आशा-जाओ २ होश में आओ
युं आना जाना छोड़दो
मुझसे तुम्हें क्या मतलब हाय बात जरा बतलाओ
प्यारे-बात फक्त इतनी सी है की तुम मेरी हो जाओ
आशा-एसी बाते अपने दिल मे
साहेब कभी लाना नही
प्यारे-चार महीने मेहनत की है
कभी रंग तो आएगी
आशा-जाओ २ यहां तुम्हारी दाल
कभी गलने न पाएगी
दिलवालो पर रोब जमाना छोड़दो
९-आशा-बालम बड़ा नादान रे
प्रीत की न जान पहचान
पैया पड़ु हाथ दबाऊं समझते नही कैसे समझाऊं
लाख जतन किये हार गई मै रोगी हो जान गई
बेदर्दी संग नाता लागा
मेरी प्रीत का भाग न जागा
बिनती करुं अब तो मेरी मान रे

१०-प्यारे-भोली सुरत दिलके खोटे
नाम बड़े और दर्शन छोटे
नये जमाने की नारी ऊंची सेंडल बाकी साड़ी
नैनो में कजरा होटो पे लाली
कोरस हाथो में कंगना कान में वाली नखरे बड़े मोटे
आशा-भोली सूरत दिलके खोटे
नये जमाने के छैला उजले कपड़े
दिल है मैला बेरंग इनकी टाई
घर में लेकिन कड़की छाई फैशन में दिल लौटे पीते
आशा-हुस्न और इश्क की यही लड़ाई
शुरु से जगमें होती आई
प्यारे कोई जीते ना कोई हारे
अरे क्यो ना फिर जाए प्यारे
दोनो-ना तुम बड़े ना हम छोटे
११-प्यारे धीरे से आजारी अखियन में
निंदिया आजारी आजा
चुपके से नैनन की बगियन में निंदिया आजारी
लेकर सुहाने सपनो की कलिया
आके बसादे पलको की गलिया
पलको की छोटीसी गलियन में निंदिया आजारी
बिमला-जगती है अखिया सोती है किस्मत

दुश्मन गरीब की होती है किस्मत
दम भर गरीबो की कुटिपन मे निंदिया आजारी
आंखें सबकी है एक जैसी
जैसे समीरो की गरीबो की एखी
किस्मत के मारो की ऽ.खियन में
निंदिया आजारी आजा...

– १२ –

आशा–शोला जो भडके दिल मेरा धडके
रंग जवानी का सताये बढ बढ के
महकी हवायें बहके कदम मेरे
पत्ता जो खडके दिल मेरा धडके
प्यार को मेरे किसी ने पुकारा
दिलमें उतर गया किसका इशारा
यादकिसी की लाई पकड के
देखा जो तुमको दर्द गया थम
अब तो न होगे तुमसे जुदा हम
जी न सकेंगे हम तुमसे बिछडके

प्रकाशक--एफ. बी. बुरहानपूरवाला, सेंट्रल प्रकाशन
सिंप्लेक्स बिल्डिंग, पाववाला स्ट्रीट, बंबई ४
मुद्रक--एस. के. खरगोनवाला
बाकीर प्रिंटिंग प्रेस, मुझफराबाद हॉल ग्रांट रोड, बंबई ७